सौ जूते

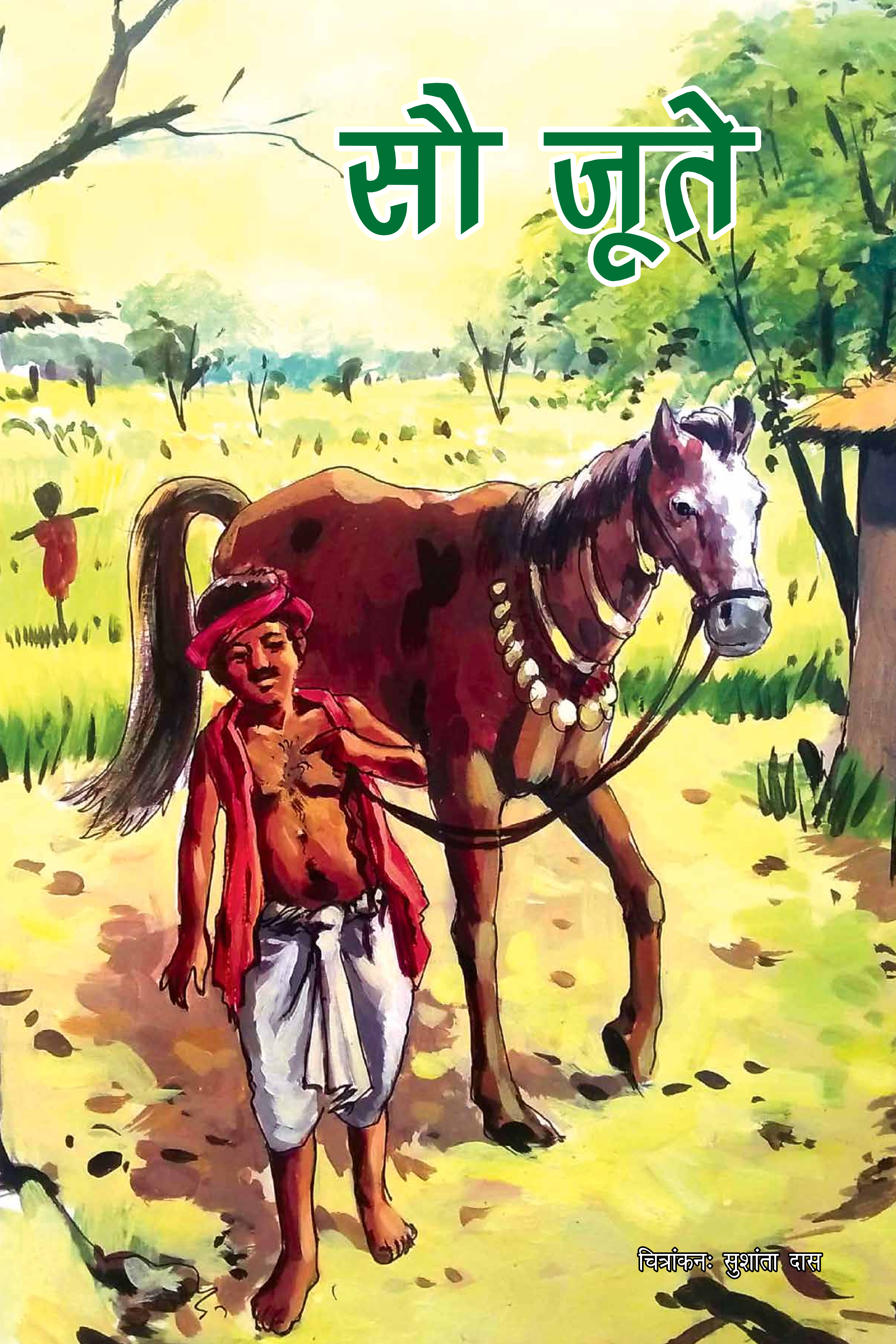

चित्रांकनः सुशांता दास

किताब के बारे में:

यह लोक कथा/कहानी उत्तर प्रदेश के ललितपुर ज़िले में प्रचलित है। यह बड़ी किताब बुन्देली और हिंदी भाषा में उपलब्ध है। एल.एल.एफ. के 'स्थानीय भाषा सामग्री विकास कार्यक्रम' के तहत यह सामग्री विकसित की गई है। बुन्देली भाषा सामग्री के एकत्रण, चयन, अनुवाद, सम्पादन करने एवं अवधारणा में ललितपुर ज़िले के शिक्षकों और शिक्षिकाओं की सहभागिता रही है।

Copyright © Language and Learning Foundation 2019
All rights reserved.

एल.एल.एफ के बारे में:

नई दिल्ली स्थित लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एल.एल.एफ.) शैक्षिक संस्था के तौर पर प्रारम्भिक भाषा शिक्षण से जुड़े आयामों पर काम कर रही है। बहुभाषी शिक्षण के तहत शुरूआती कक्षाओं में बच्चों की घर की भाषा में विकसित पठन सामग्री की भूमिका अहम होती है। यह कार्यक्रम क्षेत्रिय भाषा की विषयवस्तु पर आधारित एक पहल है।

सौ जूते

चित्रांकनः सुशांता दास

एक आदमी ने कभी राजा को नहीं देखा था। सो वह राजा से मिलने गया। संतरी ने उसको रोकते हुए पूछा, ‘‘कहाँ जा रहे हो?’’

आदमी ने सारी बात बताई। संतरी ने सोचा, ‘‘राजा इसकी हिम्मत देखकर खुश होगा। और हो सकता है, ईनाम भी दे।’’

संतरी ने बोला, ‘‘मैं मिलवा दूंगा। पर मुझे क्या दोगे?’’ आदमी ने कहा, ‘‘जो मुझे मिलेगा, वह तुम ले लेना।’’

संतरी आदमी को राजा के पास ले गया। राजा ने पूछा, ‘‘क्या हुआ?’’ आदमी ने कहा, ‘‘हुआ कुछ नहीं। मैं आपके दर्शन करना चाहता था।’’

राजा इस बात से खुश हुए कि किसी को उनके दर्शन करने थे। राजा ने पूछा, ''हम तुमको ईनाम देना चाहते हैं। बताओ क्या लोगे?'' आदमी ने कहा, ''सौ जूते मार दीजिये हुजूर।''

राजा ने कहा, ''अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो यही सही।'' आदमी ने कहा, ''संतरी को बुला लेता हूँ, मेरा ईनाम वही लेगा।''

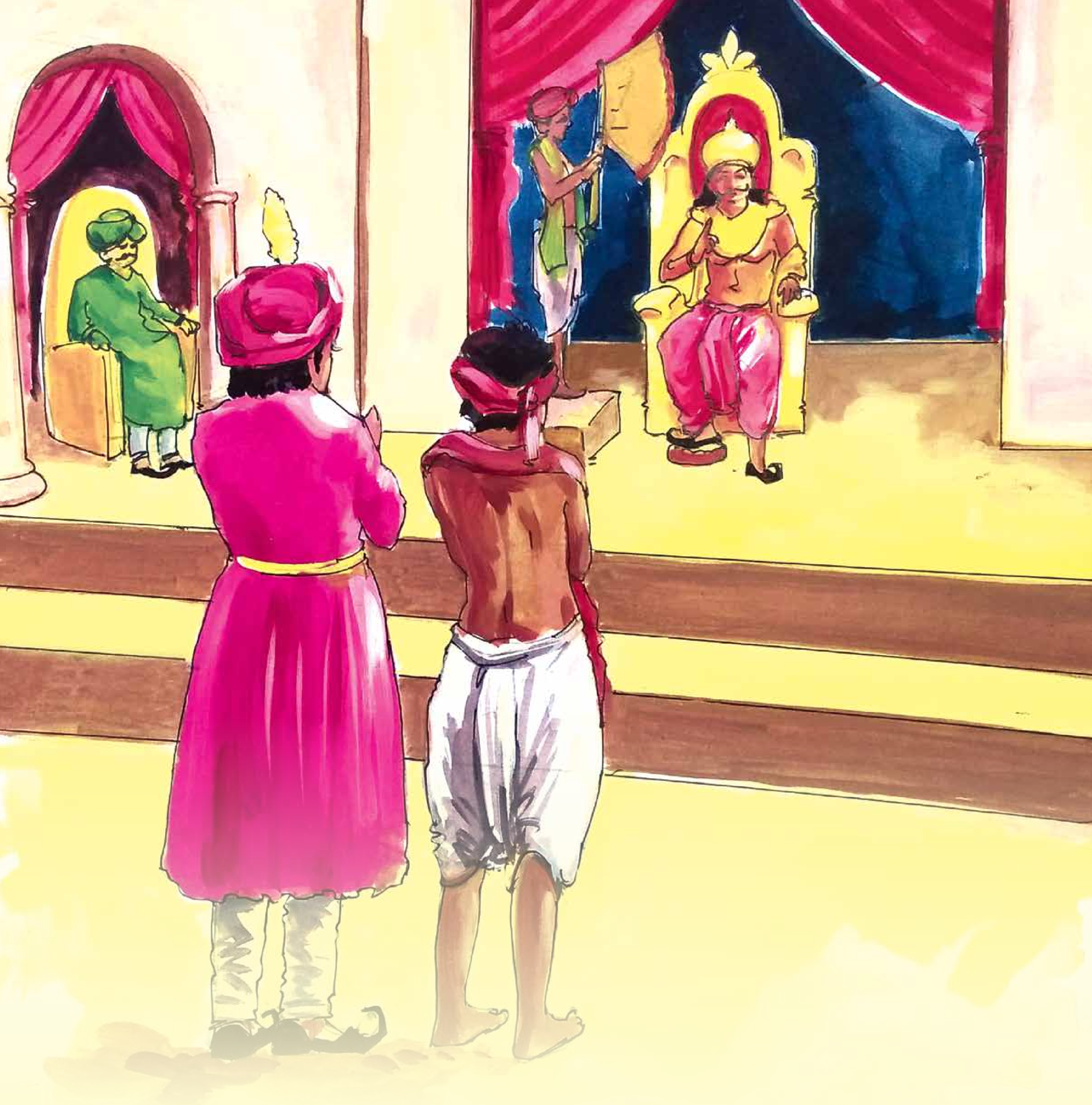

राजा ने फिर हैरानी से कहा, ‘‘तुम तो बड़े होशियार हो।’’ इस तरह उस आदमी ने संतरी को सज़ा दिलवाई और राजा को भी देख लिया।

राजा ने आदमी को ईनाम में घोड़ा दिया।
वह उसको लेकर घर आ गया।

सौ जूते

एक आदमी ने कभी राजा को नहीं देखा था। सो वह राजा से मिलने गया। संतरी ने उसको रोकते हुए पूछा, ‘‘कहाँ जा रहे हो?’’ आदमी ने सारी बात बताई। संतरी ने सोचा, ‘‘राजा इसकी हिम्मत देखकर खुश होगा। और हो सकता है, ईनाम भी दे।’’

संतरी ने बोला, ‘‘मैं मिलवा दूंगा। पर मुझे क्या दोगे?’’ आदमी ने कहा, ‘‘जो मुझे मिलेगा, वह तुम ले लेना।’’ संतरी आदमी को राजा के पास ले गया। राजा ने पूछा, ‘‘क्या हुआ?’’ आदमी ने कहा, ‘‘हुआ कुछ नहीं। मैं आपके दर्शन करना चाहता था।’’

राजा इस बात से खुश हुए कि किसी को उनके दर्शन करने थे। राजा ने पूछा, ‘‘हम तुमको ईनाम देना चाहते हैं। बताओ क्या लोगे?’’ आदमी ने कहा, ‘‘सौ जूते मार दीजिये हुज़ूर।’’ राजा ने कहा, ‘‘अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो यही सही।’’ आदमी ने कहा, ‘‘संतरी को बुला लेता हूँ, मेरा ईनाम वही लेगा।’’ राजा ने फिर हैरानी से कहा, ‘‘तुम तो बड़े होशियार हो।’’ इस तरह उस आदमी ने संतरी को सज़ा दिलवाई और राजा को भी देख लिया। राजा ने आदमी को ईनाम में घोड़ा दिया। वह उसको लेकर घर आ गया।

सौ जूते

एक आदमी ने कभऊं राजा खों नईं देखे तो। वो राजा से मिलने गओ। संतरी ने ऊखों रोकत भए पूंछी, ‘‘किते जा रय?’’ आदमी ने सारी बात बताई। संतरी ने सोचा, ‘‘राजा ईकी हिम्मत देखकें खुश हुईए, और हो सकत है ईनाम भी दे दे।’’

संतरी ने कई, ‘‘हम मिल्वा दें पर तुम हमें का दैओ?’’ आदमी बोलो, ‘‘हमें जो मिले वो तुम ले लियो।’’ संतरी आदमी खों राजा के पास ले गओ। राजा ने पूछीं, ‘‘का भओ?’’ आदमी ने कई, ‘‘भओ कछु नईं। हम तो आपके दर्शन करन चाऊत ते।’’

राजा ई बात से खुश भय कि ऊ खों उनके दर्शन करने हते। राजा ने पूछी, ‘‘हम तुमें ईनाम देन चाऊत हैं। बताओ का लैओ?’’ आदमी ने कई, ‘‘सौ मुंडा मार दो हुजूर।’’ राजा ने कई, ‘‘अगर तुमाई जेई इच्छा है तो जेई सई।’’ आदमी ने कई, ‘‘संतरी खों बुला लैन दो, हमाओ ईनाम वेई लें।’’ राजा ने फिर हैरानी से कई, ‘‘तुम तो बड़े होशियार हो।’’ ई तरा से ऊ आदमी ने संतरी खों सजा दिवाई और राजा खों भी देख लओ। राजा ने ईनाम में आदमी खों घोड़ा दओ। वो ऊखो लैकें घरे आ गओ।

Designed by www.stelladesignandprint.com

Language and Learning foundation

TATA TRUSTS